Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 2
यूरोप में सर्वसत्तावाद का उदय
(Rise of Totalitarianism in Europe)

इटली में फासीवाद का उदय: मुसोलिनी और फासीवादी राज्य

इटली में फासीवाद का उदय युद्धोत्तर संकटों का प्रत्यक्ष परिणाम था। युद्ध के बाद इटली में बेरोजगारी, महँगाई और राजनीतिक अस्थिरता फैल चुकी थी। समाजवादी आंदोलनों के बढ़ते प्रभाव से पूँजीपति और मध्यवर्ग भयभीत थे।

बेनिटो मुसोलिनी ने इस भय और असंतोष को अपने पक्ष में मोड़ लिया। उसने फासीवाद की विचारधारा प्रस्तुत की, जिसमें राष्ट्र, शक्ति, अनुशासन और सैन्यवाद को सर्वोच्च स्थान दिया गया।

1922 में "रोम मार्च" के माध्यम से उसने सत्ता प्राप्त की। सत्ता में आने के बाद उसने लोकतांत्रिक संस्थाओं को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया। संसद को निष्क्रिय कर दिया गया और सभी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

फासीवादी राज्य में शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रवादी प्रचार का माध्यम बनाया गया। युवाओं को सैन्य अनुशासन में प्रशिक्षित किया गया। प्रेस पर कठोर नियंत्रण लगाया गया और विरोधियों को जेल में डाल दिया गया।

मुसोलिनी का शासन यह दिखाता है कि कैसे लोकतंत्र के भीतर से ही सर्वसत्तावाद पनप सकता है।

जर्मनी में नाज़ीवाद का उदय: हिटलर और सर्वसत्तावादी तंत्र

जर्मनी में सर्वसत्तावाद का सबसे खतरनाक रूप नाज़ीवाद के रूप में सामने आया। प्रथम विश्व युद्ध की हार और वर्साय संधि ने जर्मन समाज को गहरे अपमान में डुबो दिया था।

हिटलर ने इस अपमान को राष्ट्रवादी क्रोध में बदल दिया। उसने आर्य नस्ल की श्रेष्ठता, यहूदी विरोध और विस्तारवादी नीति का प्रचार किया।

1933 में सत्ता में आने के बाद उसने संविधान को निलंबित कर दिया और सभी राजनीतिक स्वतंत्रताओं को समाप्त कर दिया। नाज़ी पार्टी को राज्य के समान घोषित कर दिया गया।

गेस्टापो, एसएस और प्रचार मंत्रालय के माध्यम से समाज पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया गया। यहूदियों, कम्युनिस्टों और अन्य अल्पसंख्यकों का अमानवीय दमन किया गया।